ईस्वी आदि से युग आदि का परिमाण

शक सवंत 78वर्ष पीछे है ईस्वी से और विक्रमी सावंत और ईस्वी में 57 वर्ष का आगे है। शक और विक्रमी संवत में 135 वर्ष का अंतर है, अर्थात अगर सन 2000ईस्वी है तो सवंतसर 2057 होगा तथा शक संवत 1922 होगा, अगर इसमें मुस्लिम कैलेंडर भी देखें तो यह वर्ष 1421हिजरी बनता है जो ईस्वी गणना शुरू होने के 479 वर्ष बाद हिजरी अस्तित्व में आया। यहाँ सिखों के नानकशाही केलंडर का भी जिक्र करें तो वर्ष 2000 ईस्वी को 531था, यह गणना 1449 ईस्वी में सिखों के प्रथम गुरु एवं संस्थापक गुरु नानक जी के जनम से शुरू की गई।

उपरोक्त गणना के आधार पर देखें तो हम पायेगे वर्ष 2000 को जन्में किसी जातक पर इन पध्दतीयों के अनुसार जन्म वर्ष भिन्न होंगें, मास और तिथियों का भी अंतर प्राप्त होता है।

वर्ष 2010 में नानाशही कैलेंडर को विक्रमी संवत के आधार पर मास गणना का प्रस्ताव लाकर सिखों की सर्वमान्य संस्था में पेश कीया गया।

कहने का तात्पर्य यह है की अंक ज्योतिष में प्रयुक्त होने वाली जन्म तिथि , समय एवं वर्ष आज अधिकतर देशों में ईस्वी गणना जिसे आज **ग्रेगोरी कैलेंडर*** के नाम से भी जाना जाता है, पर आधारित है। निम्न तालिका में कुछ प्रचलित वर्ष गणनाएं हैं जिनके प्रमाण आज हमें प्राप्त हैं।

वर्ष 2023 को अन्य वर्ष गणनाओं का आँकलन:

सनातन चतुर्युग*	**38,93,124**	
होलोसीन कैलेंडर*	**12023**	
बीजान्टिन कैलेंडर	7531-7532	
असीरियन कैलेंडर	6773	
हिब्रू कैलेंडर	5783-5784	
हिंदू कैलेंडर - कलियुग	5123-5124	
चीनी कैलेंडर	4721	[या 4514 癸卯年 (वॉटर रैबिट)]
	4720	[या 4513 壬寅年 (वॉटर टाइगर)]
कोरियाई कैलेंडर	4356	
डिसॉर्डियन कैलेंडर	3189	
बर्बर कैलेंडर	2973	
अब उरबे कंडिटा	2776	
बौद्ध कैलेंडर	2567	
थाई सौर कैलेंडर	2566	
तिब्बती कैलेंडर	2150	[1769 या 997 阴水兔年 (मादा जल- खरगोश)]
	2149	[या 1768 या 996 阳水虎年(नर जल- बाघ)से]
हिंदू कैलेंडर- विक्रम संवत	2079-2080	
जॉर्जियाई कैलेंडर (ईस्वी)	**2023**	(एमएमXXIII)

जूलियन कैलेंडर	ग्रेगोरियन शून्य से 13 दिन
इथियोपियाई कैलेंडर	2015-2016
जावानीस कैलेंडर	1956-1957
हिंदू कैलेंडर- शक संवत	1944-1945
बाली साका कैलेंडर	1944-1945
कॉप्टिक कैलेंडर	1739-1740
अर्मेनियाई कैलेंडर	1472
इस्लामी कैलेंडर	1444-1445
बंगाली कैलेंडर	1430
ईरानी कैलेंडर	1401-1402
बर्मी कैलेंडर	1385
इग्बो कैलेंडर	1023-1024
नानकशाही कैलंडर	555
बहाई कैलेंडर	179-180
ज्यूचे कैलेंडर	112

उपरोक्त विवरण तो एक दृषयांत भर ही है। पृथ्वी के अन्य भागों में भी देश-काल-परिस्थियों के अनुसार अनेकों गणना करने की पद्धतियों का प्रचालन होता आया है।

यहाँ हमें जो गणनाएं प्राप्त होती हैं उनमें सबसे बड़ा विवरण **सनातन चतुर्युग** का प्राप्त होता है, अत: इस विषय का थोड़ा और अधिक विस्तार से विवरण जरूरी हो जाता है।

---

* ग्रेगोरियन कैलेंडर दुनिया के अधिकांश हिस्सों में इस्तेमाल किया जाने वाला कैलेंडर है। यह अक्टूबर 1582 में पोप ग्रेगरी XIII द्वारा जारी किए गए पोप बुल इंटर ग्रेविसिमस के बाद प्रभावी हुआ , जिसने इसे जूलियन कैलेंडर के संशोधन और प्रतिस्थापन के रूप में पेश किया । मुख्य परिवर्तन अंतरिक्ष छलांग वर्षों को अलग-अलग करना था ताकि औसत कैलेंडर वर्ष को 365.2425 दिन लंबा बनाया जा सके, जो कि 365.2422-दिवसीय 'उष्णकटिबंधीय' या 'सौर' वर्ष का अधिक करीब से अनुमान लगाता है जो सूर्य के चारों ओर पृथ्वी की क्रांति द्वारा निर्धारित होता है।

* होलोसीन कैलेंडर , जिसे होलोसीन युग या मानव युग (एचई) के रूप में भी जाना जाता है, एक वर्ष क्रमांकन प्रणाली है जो वर्तमान में प्रभावी (एडी/बीसी या सीई/बीसीई) क्रमांकन योजना में ठीक 10,000 वर्ष जोड़ती है, और इसके पहले वर्ष को शुरुआत के करीब रखती है। होलोसीन भूवैज्ञानिक युग और नवपाषाण क्रांति , जब मनुष्य शिकारी-संग्रहकर्ता जीवन शैली से कृषि और निश्चित बस्तियों में स्थानांतरित हो गए। ग्रेगोरियन कैलेंडर के अनुसार वर्तमान वर्ष, AD 2023, होलोसीन कैलेंडर में 12023 HE है। एचई योजना पहली बार 1993 (11993 एचई) में सेसारे एमिलियानी द्वारा प्रस्तावित की गई थी, हालांकि उसी तारीख पर एक नया कैलेंडर शुरू करने के समान प्रस्ताव दशकों पहले रखे गए थे।

* **चतुर्युग** (चार युगों का मान 4800+3600+2400+1200= 12000 वर्ष है)

मुख्य लौकिक युग सत्य (उकृत), त्रेता, द्वापर और कलि नाम से चार भागों में विभक्त है। इस युग के आधार पर ही मन्वंतर और कल्प की गणना की जाती है। इस गणना के अनुसार सत्य आदि चार 'युगसंध्या' (युगारंभ के पहले का काल) और 'संध्यांश' (युगांत के बाद का काल) के साथ 12000 वर्ष परिमित होते हैं।

यहाँ युगों का यह परिमाण दिव्य वर्ष में है। एक दिव्य वर्ष = 360 मनुष्य वर्ष का होता है,
अत: 12000 x 360 = 43,20,000 वर्ष चतुर्युग का मानुष परिमाण हुआ। तदनुसार,

सत्ययुग = 17,28,000
त्रेता = 12,96,000
द्वापर = 8,64,000
कलि = 4,32,000 इसमें से 5124वर्ष बीत गए है जबकी 4,26,876 बाकी हैं।

चतुर्युग गणना में यह कहा जा सकता है की चार युगों में से अब तक 38,93,124 वर्ष बीत गए हैं।